देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८६/२

Impact Factor
8.642

ISSN : 2395-7115
Sept. 2025
Vol.-22, Issue-3(2)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

21वीं सदी का साहित्य : नव विमर्श

Special Issue Editor :
Dr. Poornima S.

Special Issue Co-Editor :
Dr. Anuradha P
Ms. V. Amudha

Editor :
Dr. Naresh Sihag
Advocate

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
#202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 22 ISSUE-3(2) (सितम्बर 2025) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

विशेषांक सम्पादिका :

डॉ. पूर्णिमा एस.,

डॉ. अनुराधा पी.,

मिस वी. अमुधा

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल-एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी-127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

53.	मिट्टी से बना अन्न	डॉ. टी. अरूणा कुमारी	285-289
54.	हसीनाबाद उपन्यास में नारी विमर्श	डॉ. अर्चना शर्मा	290-293
55.	भारतीय महिलाओं को सशक्त बनाने में कानूनी अधिकारों की भूमिका	विवेचना पाण्डेय, डॉ. सरिता भवानी मालवीय	294-300
56.	**Therigatha : Legacy and Relevance in 21st Century Indian Literature**	**Indresh Prasad Purohit**	**301-310**
57.	डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट की कविताओं में यथार्थ विमर्श	डॉ. लता एस. पाटिल	**311-315**
58.	**Entrepreneurial Self-Efficacy and Entrepreneurial Intentions of Tribal Women: A case Study of Chhattisgarh, India.**	**Dimpal Agrawal**	**316-328**
59.	**The Anatomy of Indifference : Literature as an Antidote to Modern Insensitivity**	**Dr. S. Farhana Zabeen, Dr. I. Jane Austen**	**329-334**
60.	**Quest for Self-Identity and Independence of Women in Preeti Shenoy's The Secret Wishlist**	**Dr. R. Abeetha, Dr.A. Jayashree Prabhakar**	**335-345**
61.	**Feminine Isolation and Resistance through Nature in Anita Desai's *Fire on the Mountain***	**Ms.Greeshma N.P, Dr. I. Jane Austen**	**346-351**
62.	बैंकिंग क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमता के अनुप्रयोग की संभावनाएं और चुनौतियां	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, श्री एच पंढरीनाथ	352-355
63.	मॉरिशस के समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्यकार अभिमन्यु अनत और रामदेव धुरन्धर के सृजनात्मक विचारों का अध्ययन	वी. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलापाटि	356-360
64.	डॉ. विद्या बिंदु सिंह के कथा-साहित्य में बदलते सामाजिक सरोकार	जे. अशोक कुमार जैन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	361-365
65.	मंजरी : किन्नर विमर्श	डी श्रीदेवी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	366-369
66.	सामाजिक माध्यम और इंटरनेट पर रचनात्मकता : नए माध्यम एवं नई भाषा (बाल साहित्य के संदर्भ में)	गुरू गोविंद विश्वत, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	370-375
67.	वृद्धों के प्रति संवेदनहीन होती मनुष्यता	बी. कमला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	376-381
68.	इक्कीसवीं सदी की हिंदी कथा साहित्य में बदलता हुआ सामाजिक यथार्थ	डॉ. अनुराधा पी.	382-386
69.	कृष्णचंदर कृत 'जामुन का पेड़' कहानी में प्रशासनिक विमर्श	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	387-392

70.	21वीं सदी के नारी विमर्श–रेत समाधि	पूर्णिमा. जे, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	393–397
71.	'बुद्धिमानों की मूर्खता' : सुरेंद्र शर्मा के व्यंग्य निबंधों में राजनीतिक विमर्श	प्रिया. एस, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	398–403
72.	21वीं सदी में तमिलनाडु स्थित बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन एवं हिंदी गृहपत्रिकाओं का प्रकाशन : एक नव विमर्श	श्री एम. संजीवी कनी, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	404–411
73.	पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)	वेंकट शिल्पा काकि, डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	412–416
74.	21वीं सदी के आधुनिक हिन्दी उपन्यास बेहया में केंद्रित नारी	अमरजीत	417–422
75.	हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श और कथा साहित्य में स्त्री दृष्टि	Mrs. S. Subha	423-425
76.	भूमिका द्विवेदी कृत 'किराये के मकान' उपन्यास में चित्रित महानगरीय जीवन की समस्याएँ	आर. डी. निर्मला, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	426–430
77.	पर्यावरण विमर्श और 21वीं सदी के उपन्यास	संगीता कुमारी	431–435
78.	समकालीन साहित्य में किसान विमर्श	इ. जाक्कुलिन, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	435–442
79.	इक्कीसवीं शताब्दी में उपन्यास–साहित्य के समक्ष चुनौतियाँ	डॉ. के आनंदी	443–446

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 8.642
Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Sept. 2025 Page No. : 412-416
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

पर्यावरण विमर्श : साहित्य में पारिस्थितिकी और प्रकृति चिंतन (बाल कहानियों के संदर्भ में)

वेंकट शिल्पा काकि, शोधार्थी
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन, शोध निर्देशिका
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, टेक्नोलॉजी एंड एडवांस्ड स्टडीज (VISTAS) पल्लावरम, चेन्नई, इंडिया।

प्रस्तावना :

साहित्य समाज का उतार–चढ़ाव, उत्तान–पतन, सुख–दुख का चिट्ठा है। साहित्य में इस विशाल संसार का हर एक विषय, विचार सभी मौजूद है। साहित्य हमारा इतिहास के अमूल्य पन्नों को दिखाता है। वहीं मानव और समाज के चरित्र में ऐसी मुश्किल पलों को भी दर्शाता है। जिससे हम कुछ सीखें और ऐसी गलतियाँ नहीं करें। साहित्य का प्रेरणा स्त्रोत पर्यावरण है। प्रकृति, पशु–पक्षी, सूरज, चाँद, तारें, ऋतु, झरना, पहाड़, आदि भी साहित्य का विषय है। यह मानव जीवन में आनंद प्रदान करने वाले अभिन्न अंग है। साहित्यकारों ने साहित्य के विभिन्न विधाओं में सूरज, चाँद, तारें, पहाड़ झरना आदि के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किया हैं। दिविक रमेश की कविता 'अगर पेड़ भी चलते होते' हमें सोचने के लिए प्रेरित करता है। बाल कहानी साहित्य में पर्यावरण से संबंधित विविध पहलुओं का अध्ययन एवं उपयोग प्रदान करने का लघु प्रयास इस शोध आलेख का उद्देश्य है।

पर्यावरण शब्द की उत्पत्ति और परिभाषा :

पर्यावरण संस्कृत शब्द 'परि' और 'आवरण' शब्दों के मेल से बना है। 'परि' का अर्थ 'चारों ओर' और 'आवरण' का अर्थ 'घेरना' दोनों शब्दों का मेल से पर्यावरण का अर्थ बनता है 'चारों ओर घेरना'। पर्यावरण, जो हमारे चारों ओर फैले हुआ हालत या संस्कृति और समाज के जटिल परिस्थिति जो व्यक्ति को प्रभावित करते हैं।

अंग्रेज में 'Environment' शब्द पर्यावरण के लिए प्रयोग किया जाता है। पर्यावरण जैविक और अजैविक वस्तु जगत जो मानव को घेरा हुआ है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी 'कुटज' में पर्यावरण के बारे में व्यक्त किया कि "यह धरती मेरी माता है और मैं इसका पुत्र हूँ इसलिए मैं सदैव इसका सम्मान करता हूँ और मैं धरती माता के प्रति नतमस्तक करता हूँ।"[1] (नारी विमर्श– शा. पी.जी. कॉलेज, गुना–आवाहन गीत–पृष्ठ क्र.143, संपादक डॉ लक्ष्मीनारायण बुनकर)

पर्यावरण संरक्षण का पक्षधर गाँधीजी कहते है– "मैं विज्ञान या तथाकथित मानवता के नाम पर निर्दोष

1. (सं.) डॉ लक्ष्मीनारायण बुनकर, नारी विमर्श– शा. पी.जी. कॉलेज, गुना–आवाहन गीत–पृष्ट, क्र. 143.

जीवों की अक्षम्य हत्या को घृणा की दृष्टि से देखता हूँ।"[2]

उक्त विषय यह स्पष्ट करता है साहित्य, मानव और पर्यावरण में गहन संबंध है। आदिवासी जीवन में प्रकृति और जीव–जन्तु के पूजा और सह जीवन पर बाल दिया है। धीरे–धीरे यह स्थिति बदली है। सहज उपलब्ध पर्यावरण से मानव निर्मित पर्यावरण का जन्म हुआ है। धीरे–धीरे यह हानिकारक रूप भी धारण कर रहा है।

पर्यावरण आवश्यकता एवं महत्व :

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। मनुष्य को घेरा हुआ पर्यावरण यथा आस–पास के प्रकृति, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु, पेड़–पौधे, भौगोलिक परिस्थितियों के बारे में जानना अनिवार्य है। पर्यावरण या प्रकृति ज्ञान से मानव अपना जीवन सुगम बनाता है। अपने आस–पास के वन्य जीव–जन्तु, पशु–पक्षी की जानकारी से वह जंगली जानवरों से अपने आप को बचाता है। साथ ही पालतू जानवरों की सहायता से सुखद जीवन प्राप्त करता है। अपने आसपास के पेड़ पौधों से फूल, फल और औषधियाँ प्राप्त करके अपनी भूख मिटाता हैय बीमारियों से राहत पता है। ऋतुओं की जानकारी से मानव समय–समय में प्रकृति परिवर्तन का ज्ञान पता है। उसके अनुकूल अपना रहन–सहन, खान–पान में परिवर्तन करता है। पर्यावरण एक अमूल्य राशि है, जिसके बिना मानव जीवन संकट मय हो जता है। मानव उन्नति की हर कदम पर्यावरण की सहायता से हुई है। इस संसार का अस्तित्व ही स्वच्छ वायु के अभाव में प्रश्नार्थक हो जाता है। इस प्रकार मानव जीवन और पर्यावरण में अटूट बंधन है। मानव जीवन के लिए यह महत्वपूर्ण है।

साहित्य और पर्यावरण :

यह सर्वमान्य है कि पर्यावरण के हर एक कण मानव के लिए उपयोगी है। इसलिए पर्यावरण साहित्य का अभिन्न अंग बना है। सदियों से विद्यमान साहित्य में प्रकृति सौंदर्य का वर्णन, जीव जंतुओं के द्वारा सिख प्रदान करना आदि उपलब्ध है। अथर्व वेद में वन, पृथ्वी और पेड़–पौधों की प्रार्थना मिलती है। कालिदास का मेघ संदेश काव्य में मेघ के द्वारा संदेश पहुँचाने का अनुपम प्रयास प्राप्त है। आदिकाल के रासो काव्यों में प्रकृति वर्णन की झलक मिलता है। उदाहरणार्थ पृथ्वी राज रासो में हमें ऋतुओं का वर्णन मिलता है। इस प्रकार वेदों के काल से लेकर वैज्ञानिक यांत्रिक युग में भी पर्यावरण चित्रण साहित्य में विद्यमान है।

आज भी साहित्य की किसी भी विधा में देखे तो सूर्योदय, सूर्यास्त, ऋतु वर्णन, सागर, झरनों का वर्णन आदि देखने को मिलते हैं। मानव अपने अति आग्रह के लिए मनमानी करके नियमित प्रकृति चक्र को बदला है। जिस कारण आज सभी को प्रदूषण से संबंधित विभिन्न समस्याओं से जूझने का नौबत हुआ है। यथा अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भूकंप आदि। इस प्रकार मनुष्य खुद का शत्रु बन गया है। इन विकट समस्याओं का समाधान समय की माँग है। जनता में जागरूकता लाना है। पर्यावरण के बारे में समग्र जानकारी बचपन से देना अतिआवश्यक है। इस दृष्टि से घर, परिवार के अतिरिक्त साहित्य का भी अहम कर्तव्य बनता है। बच्चों को उक्त विषयों को परिचय करने के लिए बाल साहित्य एक सक्षम साधन है। बाल कहानी साहित्य जैसी सक्षम विधा बच्चों के इर्द–गिर्द की परिवेश, घटना को मूल विषय बना कर उन्हे समाज के विभिन्न परिवेशों से परिचित करती है।

पेड़–पौधों की आवश्यकता :

21वीं सदी के सुप्रसिद्ध बाल कहानीकार प्रकाश मनु 'पेड़ हमारे यान है' कहानी में पेड़ का महत्व के बारे

2. (प्र.सं.) शंभूनाथ, हिन्दी साहित्य ज्ञानकोश, पृ. सं. 2046

में रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

रतालू खूब पसंद करने वाले राजा रतालुमल सदा रतालू खाते रहता है। उन्हें एक शानदार आलीशान महल बनाने की आशा थी। इस कारण वे अपने खजाना पूरा खाली करता है। लेकिन महल पूरा नहीं होती है। फलतः राजा बीमार पड़ता है। वैद्य का दावा काम नहीं आने पर जंगल के ज्ञानी साधु को बुलाते हैं। साधु वृक्ष की सहायता से राजमहल पहुँच कर राजा की बीमारी ठीक करते हैं। राजा बदले में साधु को कीमती चीज देकर मर्यादा करना चाहता है। परंतु साधु इनकार करते हुए वृक्ष की महत्ता के बारे में यूँ समझाते हैं –"राजन, मैं पेड़ के नीचे बसेरा करता हूँ। उसी पेड़ के फल खाकर मेरा गुजरा हो जाता है। सर्दी, गरमी, बरसात में वही मेरा घर है। वही मेरा यान भी है, जिसमें बैठकर मैं आपके पास आया हूँ.....। और भला मुझे क्या चाहिए?"[3] इस प्रकार राजा वृक्ष का महत्व समझकर अधूरा महल को जनता के कल्याण के नाम कर देते हैं।

वन और वन्य जीव :

वन कई जंतुओं का घर होता है। शेर, हाथी, से लेकर नन्ही सुंदर खरगोश तक सभी जानवर जंगल में रहते हैं। हम अपने खुशी के लिए उनमें कुछ जन्तु जैसे खरगोश, तोता, मैना, आदि घर में पालते हैं। लेकिन अगर इनकी ख्याल रखने में कुछ गलती हुई तो वे मुश्किल में पड़ जाते हैं। अगर हम जन्तु प्रेमी है तो उनका पूर्ण ख्याल रखे। नहीं तो उन्हे अपना घर जंगल में रहने दें। इसी पर बल देता है प्रकाश मनु की कहानी 'रंग बिरंगी खरगोश'। कहानी का मुख्य पात्र मखना सुंदर छोटा सा लड़का, जो पढ़ाई से ज्यादा पेड़–पौधों से प्यार है। एक दिन मखना अपने दोस्त के घर में सुंदर खरगोश देख कर खुद खरगोश पालने के लिए माँ से जिद करता है। मखना का जिद तोड़ने, माँ घर का पुराना नौकर करमा से खरगोश लाने के लिए कहती है। करमा के द्वारा खरगोश पाकर मखना खुशी से बेहाल होता है।

बिल्ली और कुत्तों से खरगोशों को बचाने उन्हें बाड़ा में रख कर उनका संरक्षण करता है। उनके साथ खूब खेल कर मजा लेते हुए पढ़ाई पर ध्यान देना भूलता है। परीक्षा का समय करीब आते ही मखना परीक्षा में फेल होने के डर से पढ़ाई पर ध्यान देना शुरू करता है। परिणामवश वह खरगोशों से खेलना कम हो जाता है। एक बार मखना जल्दबाजी में बाड़ा का दरवाजा सही तरह बंद नहीं करता है। फलतः कुत्ते खरगोश पर भारी पड़ते हैं। मखना विषय को जानने से पहले कुत्ते एक खरगोश को मार देते हैं। मखना मार हुआ खरगोश को देख कर रोने लगता है। बाकी खरगोशों को पकड़ कर बाड़ा में रख कर सही तरह दरवाजा बंद करता है। मार हुआ खरगोश को दूर जमीन में गढ़ कर वापस आते समय करमा समझता है कि मखना की गलती की वजह से खरगोश मर गया है। ऊपर से कहता है– "ये जंगल में होते तो किसी झाड़ी के पीछे छिपकर अपना बचाव खुद कर लेते। तुम इन्हें पाल रहे हो, तो इनकी संभाल का जिम्मा भी तुम्हारा ही हुआ न! संभाल नहीं सकते तो जाकर जंगल में छोड़ आओ।"[4] मखना करमा की बोध से प्रेरित होकर अपनी भूल को सुधारने बाकी खरगोशों को जंगल में छोड़ देता है। जब भी उन्हे देखने की मन करने पर करमा के साथ जंगल पहुँच कर खरगोशों का इंतजार करता है। इस प्रकार लेखक उपरोक्त कहानी में जानवरों की रक्षा करने के लिए साथ ही वनों की आवश्यकता के बारे में सरल और सुंदर ढंग से समझाया है।

---

3. प्रकाश मनु, पेड़ हमारा यान है, पृ. सं. 57.
4. प्रकाश मनु, रंग बिरंगी खरगोश, पृ. सं. 49.

पवन कुमार वर्मा की कहानी वह 'घर पहुँच गया' भी वन्य जीव और जंगल की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखा गया कहानी है। दीपू के मोहल्ले में आया बंदरों का झुंड से एक बंदर अपने साथियों से बिछड़ गया। मोहल्ले की नीम का पेड़ पर रहना शुरू करता है। दीपू बंदर की भूख मिटाने रोटी देता है। गप्पू बंदर को लाठी से डराकर बहादुरी दिखने की चेष्टा करता है। एक बार बंदर डर से उभर कर गप्पू से लड़ने तैयार होता है। गप्पू की चिल्लाने पर मोहल्ले वाले बंदर को भगाने आते हैं और गप्पू बच जाता है। दीपू बंदर के बारे में सोचता रहता है। पिताजी से उस बंदर की अपनी मोहल्ले में रहने के बारे में पूछता है। दीपू के पिता कहते है–"बेटा! इसके रहने की असली जगह तो जंगल में है! वहाँ उसे खाने को पत्तियाँ और फल आसानी से मिल सकते हैं। यहाँ तो यह बहुत दिनों तक जीवित नहीं रह पायेगा। यहाँ उसे उसका खाना आसानी से नहीं मिल सकता।"। एक बार छतों पर दौड़ते हुए बंदर पेड़ तक पहुँचने की जल्दी में तेज बिजली की तारों में उलझ कर करंट लगने के कारण बेहोश होकर गिर जाता है। दीपू बंदर पर पानी डाल कर उसे होश में लता है। मनुष्य समाज में उस अकेला वन्य प्राणी की स्थिति देख कर दीपू उसे जंगल में छोड़ ने का निर्णय लेता है वह अपने पिताजी से बंदर को मोहल्ले जंगल छोड़ने की बात करते हुए कहा "अपने घर! जंगल में।"[5] पिताजी की सहायता से दीपू बंदर को पास जंगल में छोड़ देता है। बंदर अपने झुंड को पाकर खुशी से झुंड वालों से मिलता है। इस संसार में सभी का अपना जगह होता है। उस संतुलन को बिगाड़ना नहीं चाहिए। पवन कुमार वर्मा इस किस्से के माध्यम से वन्य जीवों की रक्षा के लिए वनों की आवश्यकता पर बाल दिए है। साथ ही प्राणियों पर हिंसा नहीं करने की सीख प्रदान किया है।

प्रकृति सौंदर्य :

वन, नदी, झरना, पहाड़, बारिश, पूर्णिमा की रात आदि कई ऐसे प्रकृति के सहज सुंदर दृश्य हमें मोहित करते हैं। प्रकृति के मेघ, बादल, बूंद आदि को सहारा बनाकर कहानीकार मनोरंजक कहानियाँ लिखी हैं। जो बच्चों में प्रकृति की ओर रुचि बढ़ाती है।

खेती करने के लिए कृषक वर्षा की इंतजार करते है। इसी विषय को पीठिका बना कर पवन कुमार वर्मा की कहानी 'घमण्डी बादल' बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किए है।

पर्वत राजा बादलों को आदेश देते है कि बादल जल्दी जाकर धरती पर बरसें। सफेद बादल काले बादलों के झुंड देख कर उनका मजाक उड़ते है। लेकिन सफेद बादलों की सुंदरता से धरती के सभी खुश नहीं होते हैं। तभी काले बादल आते हैं तो सफेद बादल उनका मजाक उड़ाते कहता है–"लो! ये भी आ गये। इन्हीं की कमी रह गयी।"[6] धरती के हर प्राणी घने काले बादल को देख कर बहुत खुश होते हैं। काले बादल खूब बरसते हैं। सफेद बादलों की घमण्ड चूर–चूर होती है। लेखक बादलों के मदद से बच्चों को घमण्ड छोड़ने की शिक्षा प्रदान किया है। मानव जीवन में पर्यावरण की अहमियत को स्पष्ट किया है।

निष्कर्ष :

प्रकृति हमारा जीवन का अभिन्न अंग कहना गलत नहीं है। प्रकृति की आवश्यकता से ज्यादा अपने स्वार्थ के लिए, सुख के लिए उपयोग करना प्रकृति विनाश का कारण बनता है। छोटे–छोटे विषयों पर ध्यान देते हुए

5. पवन कुमार वर्मा, अक्ल बड़ी या भैंस, पृ. सं. 39.
6. पवन कुमार वर्मा, अक्ल बड़ी या भैंस, पृ. सं. 3.

हम बड़ा कार्य को आसानी से निभा सकते हैं। उपवनों को बढ़ावा देना, अपने घर में पौधों को डालना। घर और आस–पास के जगहों को साफ सुतरा रखना आदि हमें पालन करना है और बच्चों को सिखाना है। इससे प्रकृति से बच्चों की दोस्ती हो जाती है। आज के साहित्यकार और पत्र–पत्रिकाओं के प्रयास से बच्चों में पर्यावरण के प्रति जानकारी देते हुए उन्हें जागरूक बना रहे हैं। माता–पिता और पाठशालाओं में भी प्रकृति और पर्यावरण की अवगाहन प्रदान करने से बच्चे पर्यावरण के समस्याओं का समाधान ढूँढ कर विज्ञान की सहायता से पर्यावरण में संतुलन लाने की प्रयास करें। इससे सुंदर भविष्य की कल्पना साकार हो सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

1. प्रकाश मनु, मेले में ठिनठिनलाल, इंडिया डिजिटल पुब्लिशर्स, 2023, दिल्ली।
2. पवन कुमार वर्मा, अक्ल बड़ी या भैंस, प्रकाशन विभाग, 2022, नई दिल्ली।

वेब ग्रंथ सूचि :

- कांबले डी.एस., पर्यावरण अवनयन : एक अध्ययन, Review of Research, volume-8, issue-9, 2019.
- https://mdu.ac.in/UpFiles/UpPdfFiles/2021/Jun/4_06&14&2021_12&37&49_Environmental%20 Science_BA1009&I.pdf

ईमेल : silpa.kv@gmail.com
ईमेल : hodhindi@velsuniv.ac.in